



करिदार - 1 अंतरंग कहानी

खान मार्केट के ब्लू कैफ़े में उसे पहली बार देखा कला प्रदर्शनी के चित्रों को गौर से देखते, जैसे रंगों की जुबां समझने की कोशिश कर रही हो, बुक रीडिंग के बीच सर हलियाते, जैसे शब्दों को पी रही हो, तब उसकी गंभीरता और आत्मवश्वास उसके

व्यक्तित्व से बलिकूल मेल खाता नहीं लगा।

शहद सी गहरी सुनहरी भूरी आँखें, बायें गाल पर पड़ता गहरा सा गड्ढा, सुरख लाल रंग की लपिस्टकि और ऊँची ऐड़ी के सैण्डलि पहने रक्तमि गौर वर्ण की वह लड़की मुझे कुछ अलग सी दखी, नज़र उसके चेहरे पर जाकर चपिक गई।

उसे देखते ही मन में ख्याल आया- कमबख्त लुक्स के मामले में कतिनी लकी है ! ऐसा परफेक्ट और स्लट्री लुक कहाँ देखने को मलिता है। सुबोध साथ होते तो मुझे चड़िने के लएि यही कहते। हो सकता है उनकी बात सुन कर मैंने उन्हें हलके से

चकिोटी भी काट ली होती।

मन भी कतिना नासमझ होता है मेरी उम्र क्या अब अपने से आधी उम्र की लड़की से रश्क करने की है?

अपने आप पर मुस्कराते हुए मैं उठी और अपनी कतिबें सँभालते हुए बाहर आ गई।

दल्लिी की ठण्ड दनि पर दनि सुस्त पड़ती जा रही है दो चार दनि धुंध पड़ती है और बसितर से बाहर नकिलने का टाइममेज बगिड जाता है। सुबोध के ऑफसि की सालाना कांफ्रेंस हर साल की तरह इस बार भी मुझे दल्लिी ले आई है।

मुंबई वाले ठंड के लएि तरस जाते है और मैं तो खास कर दल्लिी आने के बहाने दूढती हूँ इस बार सुबोध की कपनी ने सालाना कांफ्रेंस के लएि सपत्नीक नमिंत्रण दयिा तो मैं कहाँ मुंबई में टकिने वाली थी।

सुबोध ने तो यों ही पूछा था- इस बार की एन्युअल कांफ्रेंस में सपत्नीक नमिंत्रण है, तुम चलोगी?

और मैंने झट से हाँ कर दी, यह कहते हुए कि मेरे कौन से बच्चों के एक्जाम है जो मैं नहीं जाऊँगी, मैं साथ चल रही हूँ पर तुम मेरी तरफ से बेफकिर रहना, मैं बोर होने की शकियात नहीं करूँगी, आर्ट गैलेरी, कॉफ़ी शॉप और कतिबें मेरा मन बहला

देंगी फरि शॉपगि तो मेरा मनपसंद टाइम पास है ही।

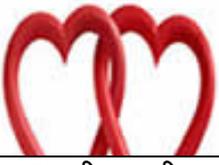
सुबोध मुस्कुरा भर दएि, उन्हें पता था कि मेरे साथ चलने का मतलब था कि उनकी ड्रकिगि और स्मोकगि पर मेरी पहरेदारी कायम रहेगी और वो दूर की बदोलत मलिने वाली छूट से महरूम रह जायेंगे।

अभी दो ही दनि गुज़रे थे मेरे पास दो दनि का वक्त और है कतिबों की सूचि में अभी भी कुछ खरीददारी बाकी है जिन्हें दुकानदार ने कल तक मंगा कर देने का वादा कयिा है। सोचा कल आऊँगी और कैफ़े में होने वाली बुक रीडिंग में भी शामिल

हो जाऊँगी।

सुबोध से तो 8 बजे तैयार मलिना होगा।

अगले दनि जब कैफ़े पहुँची तो सभी कुरसयिाँ पहले से ही भरी हुई थी, कोने में एक खाली कुरसी दखिाई दी,



साथ की कुर्सी पर वही शहद सी भूरी एक जोड़ी आँखें फरि नज़र आई, कुछ अच्छा सा लगा, मैं चल कर वहाँ पहुँची तो उसने पास पड़ी

खाली कुर्सी की तरफ इशारा कर दिया, मैं बैठ गई।

हमारी आँखों में कल की आधी अधूरी पहचान की परछाई बाकी थी। वह शायद अपना भवष्य फल पढ़ने में डूबी थी- 2012 वृश्चकि राशिवालों का भवष्य कल की तारीख में जदिगी का रंग क्या होगा, आज ही तलाश लेने की कोशिश कम से कम

मुझे तो नहीं भाती।

“ओह तो आप स्कोरपयिन हैं?” न जाने कैसे मेरे मुँह से निकल गया।

वह मुस्कराई और बोली- क्या आप भी?

“नहीं नहीं ! मेरा बर्थ साइन लबिरा है।” मैंने बताया।

इतने में कैफे के एक लड़के ने घंटी बजाते हुए सबका ध्यान अपनी ओर खींचा, उसका कहना था कि आज की बुक रीडिंग किसी कारणवश स्थगित की जा रही है और नई तारीख तय होते ही सबको सूचित किया जायेगा।

“अब आई हूँ तो कॉफी का एक दौर तो चल ही सकता है !” ऐसा सोचते हुए मैंने अपने लिए केपेचिनो का ऑर्डर दे दिया।

वह अपने भवष्य में कॉफी की चुस्कियों के साथ लौट गई।

मन में उससे बात करने की चाह जागी- चलो, दोस्ती ही करते हैं।

मैं उससे बात करने का बहाना ढूँढने लगी, उसका पढ़ना जारी था, बीच-बीच में वह दीवार पर लगे चित्रों को देख कर कुछ कुछ सोचने के लिए रूकती।

“आप चित्रकार हैं?” मैंने कॉफी का घूंट भरते हुए पूछा।

वह मुस्कराई पर चुप रही।

“क्या पत्रकार हैं?” मैंने फरि पूछा।

उसने नहीं के अंदाज़ में सर हलिया और दीवार पर नगिह टकियाती हुई बोली- चलएि बताती हूँ।

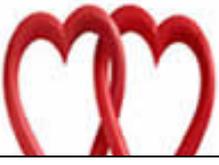
“अगर मैं कहूँ कि मैं हाई क्लास कम्पेनयिन का जॉब करती हु तो आप क्या कहेंगी?”

“कम्पेनयिन?” मैं चौकी, अब इतनी अंग्रेजी तो आती है कि कम्पेनयिन का मतलब समझ सकूँ। मतलब समझ में आने के बावजूद मैंने दोहराया- कम्पेनयिन मतलब साथी?

“सही समझी आप ! बस यही मेरा काम है।”

“यह कैसा काम हुआ? तुम मजाक कर रही हो ! सच बताओ न, कहाँ काम करती हो?” मैं आप से तुम पर उतर आई थी।

“सच ही तो बता रही हूँ आप शायद समझ कर भी समझना नहीं चाह रही ! मैं पुरुषों को कम्पनी देने का काम करती हूँ, या यह कह लीजिये मैं उन्हें एस्कोर्ट करती हूँ।”



“एस्कोर्ट करना? कंपनी देना? यह कैसा काम है?”

वह फिर सिर्फ मुस्करा भर दी उस मुस्कराहट को समझना मुश्किल था।

“वरकगि गर्ल तो समझ में आता है पर एस्कोर्ट करना या कम्पनी देना समझ में नहीं आता !” मैं शायद उसे कुरेदने लगी थी।

“आपकी समझ के मुताबकि मैं शायद कॉलगर्ल हो सकती हूँ।” इस बार उसके चेहरे पर मुस्कराहट की जगह गंभीरता उतर आई थी।

मुझे जोर का झटका लगा, मैं पता नहीं कैसा महसूस करने लगी मुँह में कड़वाहट सी घुल गई, एक पल को हाथ पैर ठण्डे पड़ गए, मैं अपने आपको समेटने लगी, मेरी साड़ी के पल्लू का एक कोना जो अभी तक उसके घुटने को छू रहा था, उसे

समेटना चाहा, जैसे कहीं कोई गंदगी न छू जाये !

हमारे बीच चुप्पी पसर गई।

उसकी कमान सी भवें, भरी लम्बी पलकें, गालों की लाली, होंठों के कनारों पर आकर रुकी हुई रंगत, सभी कुछ नकली लगने लगा।

वह मुस्कराई और बोली- मेरा बमशेल-लुक अब आपको बुरा लग रहा है न?

उसकी आवाज़ में लपित सवाल मुझे फिर चौंका गया। कैफ़े की दीवार पर लगे आदमकद शीशे में मैंने अपनी शकल देखी, क्या मेरा चेहरा इतना बोलता है जो इसने मेरे मन में उठी बात इतनी जल्दी भांप ली?

मुझे लगा इस मेज पर बैठने की गलती की, अकेली किसी मेज पर बैठती तो शायद यह दक्कित पेश नहीं आती। अब एकदम यहाँ से उठना बदतमीजी होगी पर यह खुद कौन सी शरीफ है?

मैंने मन ही मन सोचा, समझ नहीं आया कतिरस खाऊँ या नफरत ?

कुछ भी नहीं सूझा पर मेरे अन्दर की औरत की जज़िआसा बढ़ गई, पूछ बैठी- ऐसा कैसे हुआ? मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम ऐसा काम करती हो। इतनी शालीन, सलीकेदार लड़की ऐसी जदिगी कैसे जी सकती है?

वह मुस्कराई और बोली- क्यूँ? आपको मुझमें कुछ बुराई लगती है? अब क्या आपको मुझसे बदबू आ रही है? एम आई स्टनिकगि?

“तुम यह काम क्यों कर रही हो? महज पैसे के लिए? क्या पैसा ही तुम्हारे लिए सब कुछ है?”

“मैं इस प्रोफेशन में पैसे और सेक्स के लिए नहीं आई इसका उन्माद और अनुभव मुझे यहाँ तक खींच लाया !”

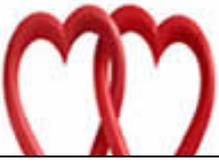
“और तुम्हारे ग्राहक?”

“प्लीज़ ! इस घटिया शब्द का इस्तेमाल न करें ! मैं ग्राहकों से नहीं क्लाइंट्स से डील करती हूँ।”

“हे भगवान ! यह लड़की है या तूफान?”

मेरी नगिहें उस पर टिकी रही यह जानने की लालसा में कि वह आगे क्या बोलेगी।

पर मैं अपने आप को ज्यादा रोक न सकी और पूछ बैठी- पर कौन कसि चुनता है?



“मैं अपने क्लाइंट्स खुद चुनती हूँ। क्लाइंट्स आकर्षक पुरुष होते हैं, ज्यादा से ज्यादा 35 से 40 तक के ! जैसे एक मल्टीनेशनल बैंक का कंट्री हैड जो अब बहुत अच्छा दोस्त है, बॉलीवुड के एक प्रोड्यूसर को भी कम्पनी देती हूँ, एक सॉफ्टवेयर

कम्पनी का चीफ एक्जिक्यूटिवि है, कुछ और भी हैं, उनकी कम्पनी के खर्चे इतने बड़े होते हैं कि मैं भी एक खर्च की तरह उनकी कम्पनी के खाते में खप जाती हूँ और उनके लिए मुझे मेरे खर्चे समेत छपा पाना कोई मुश्किल नहीं !”

“वैसे तुम उन्हें कतिनी महंगी पड़ती हो?”

यह सवाल पूछते समय मुझे अपने आप पर घनि आई !

वह मुस्कराई- कम से कम 50000 और दो दानि की बुकगि जरूरी है। रोज रोज कोई तंग न करे इसलिए फ़ीस ज्यादा रखी है। महीने में एक अपॉयन्टमेंट काफी है, हफ्ते में एक क्लाइंट से नपिटने लगी तो यह सब रूटीन बन जायेगा और रूटीन से

बोरयित होती है। यह तो आप मानेंगी ही !”

“बदतमीज़, खुले आम धंधा करती है और बात रूटीन और बोरयित की करती है? करतूतें चुड़ैलों जैसी और मजाज परयों से?”

“तुमहें नहीं लगता, तुम कुछ गलत कर रही हो?”

“क्यूँ? क्या गलत है इसमें? कम से कम इतनी तो हमिमत रखती हूँ कि जो करती हूँ, उसे स्वीकार करती हूँ, मैं अपने क्लाइंट्स के साथ समय बताने की ही तो कीमत लेती हूँ, लाइफ़ स्टाइल और सेक्स इस पैकेज का हिस्सा है। अपनी इस

कामुकता और उत्तेजना को खुद एन्जॉय करती हूँ, इसे आप मेरा नशा कह सकती हैं।”

“क्या कभी किसी से मन से नहीं जुड़ी?”

“भावुकता में बहने लगी तो तबाह हो जाऊँगी मैं ! मैंने अपने लिए खुद ही रूल-बुक बनाई है, जैसे अपने पैसों के लेनदेन का हिसाब मैं खुद करुँगी, मन को किसी भी कीमत पर कमज़ोर नहीं पड़ने दूँगी और कसिका साथ देना है, यह फैसला मेरा

अपना होगा।”

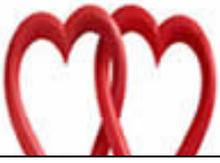
वह सहजता से अपनी बात कहती रही, इस घटयिपन में भी वह चुनने के हक की बात का बखान शान से कर गई, यह देख कर मैं दंग थी।

“तो चुनती कैसे हो?”

“मैं मलिने से पहले अपने क्लाइंट्स से खुल कर बात करती हूँ।”

“एक बार की बातचीत में क्या पता चलता है?”

“एक बार नहीं, मैं कई बार बात करती हूँ, इमेल से बात होती है, चैट करती हूँ, उसकी फोटो मेल पर मंगवा कर देखती हूँ, केमेस्ट्री समझती हैं आप? जब मुझे आदमी की केमेस्ट्री अपने से मेल खाती लगती है, तभी उससे मलिने के लिए राज़ी होती



हूँ, वरना वहीं चैप्टर क्लोज़ कर देती हूँ और फरि बात खत्म ! मैं स्टुपडि चक्करो से दूर रहती हूँ !”

“पर तुम तो पढ़ी लखी लगती हो, और तुम्हारे शौक भी पढ़े लखे लोगों के से हैं।” हमारे बीच की बातचीत धीरे धीरे रफ़्तार पकड़ने लगी थी।

“तो क्या आप समझती हैं कयिह काम सरिफ़ अनपढ़ औरतों के हस्से ही आता है?” मेरे चेहरे पर उत्तरी मासूमयित की खल्लिली उड़ाते हुए उसने पूछा।

“यह बात नहीं, पर तुम मुझे कहीं से भी मजबूर नहीं लगती फरि यह सब क्यों? शादी क्यों नहीं करती? शादी के बाद सेटल हो जाओगी तो खुश रहोगी।”

“मेरे ख्याल से शादी लोगों को सेटल कम और अनसेटल ज्यादा करती है !” मेरे आसपास का अनुभव तो कम से कम यही कहता है ! रशिते में पत्नी सरिफ़ बार्बी डॉल की तरह तोड़ी-मरोड़ी जाती है। पर आप नहीं समझेंगी !”

“क्यों नहीं समझेंगी? एक तरफ़ अपने को कम्पेनयिन कहती हो, एक तरफ़ एस्कोर्ट बताती हो, इसमें समझने को रखा ही क्या है?” मैंने अपनी कतिबेँ समेटते हुए कहा।

“बाई द वे, मैंने एम.बी.ए कयिा है और अर्थशास्त्र में एम ए भी हूँ।”

“तो फरि यह सब कसिलएि?” मैंने कुरसी से उठते हुए कहा मेरी आवाज़ में एक झड़िकी थी, पता नहीं कसि हक से मैं उस पर अपनी नाराजगी ज़ाहरि कर गई।

वह मेरा हाथ पकड़ कर मुझे खींच कर वापसि बठिते हुए बोली- बैठएि, आपसे बात करना मुझे अच्छा लग रहा है !”

उसने अपना पर्स खोला और नेल फाइलर नकिल कर हल्के से अपने नाखूनों को आकार देने लगी।

“आपको बुरा तो नहीं लगेगा यदमैं नेल फाइल करते हुए आपसे बात करूँ?”

“अब बुरा क्या लगेगा?” मैंने मन ही मन कहा पर वह फरि भांप गई- छोड़एि, नहीं करती ! बेड मैन्स !

कहते हुए उसने नेल फाइलर वापस पर्स में डाला और अपना वजिटिगि कार्ड नकिल कर मेरे कॉफी के खाली कप के पास रख दयिा।

कार्ड पर खूबसूरत लखिवट में लखिा था- कारा बोस

मुझे अचानक महसूस हुआ कहिम एक दूसरे का नाम भी नहीं जानते हैं पर पता नहीं कैसी बातों के चक्कर्व्यूह में फंस चुके हैं। सुबोध ठीक ही कहते हैं कबितयिने का मेरा यह शौक मुझे कभी बड़ा मंहगा पड़ेगा।

“तुम मुझे अनु कह सकती हो !” कार्ड हाथ में लेकर उसे करीब से देखने के बाद मैंने बैठते हुए कहा।

अपनी पहचान की परछाई को भी मैं उससे छपिा कर रखना चाहती थी।

“यह मेरी ही लखिवट है।” उसने मुस्कराते हुए बताया।

मेरी नगिाह उसकी उँगलियों पर से गुज़र गई !

उसकी आँखों में झांकते हुए मैंने पूछा- पहल कैसे होती है?



“मैं जसि किसी पुरुष से मलित्ती हूँ वे कम से कम इतने शालीन तो होते ही हैं कि सेक्स का जिक्र न करें। अगर सरिफ सेक्स ही उनके दमिाग पर हावी है तो वे किसी को भी घंटे भर के लिए भाड़े पर ला सकते हैं।”

“तुम्हें नहीं लगता कि तुम ज़रूरत से ज्यादा नखरे करती हो?”

“आपको ऐसा क्यों लगता है?”

मेरे सवाल के जवाब मैं उसने सवाल कर दिया लेकिन फिर खुद ही बोलने लगी- मेरे पास दमिाग व शरीर दोनों हैं, मैं अपनी बुद्धि पहले बेचती हूँ और शरीर बाद में ! मैं 5 भाषाएँ बोल सकती हूँ, चायनीज़ सीख रही हूँ, आजकल इसकी मांग है, रोज़

अखबार व पत्रिकाएँ पढ़ती हूँ, जसि किसी व्यक्ति से मिलने का मन बनाती हूँ तो पहले उसके बिजनेस को गहराई से समझती हूँ ताकि मिलने पर उसकी समस्याओं पर बात कर सकूँ और हो सकता है उसे कुछ सलाह भी दे सकूँ।”

“तुम क्या सलाह दोगी?”

“आप मुझे पूरी तरह नकारात्मक दृष्टि से देख रही हैं !”

“तुम्हारा अन्दर सकारात्मक है क्या? यह तो पता चले !” मेरी खीज उससे छपी नहीं रही।

“आप मानेंगी नहीं पर मेरे कई क्लाइंट्स तो ऐसे हैं जो मुझे कई बार दोहरा चुके हैं।”

“तुम्हारी इस शकल और शरीर के लिए ही ना?!!?”

“जी नहीं ! अक्ल के लिए !” उसने गर्दन ऊँची करके कहा।

“क्या नरि बेवकूफ हैं जो बार-बार तुमसे अक्ल मांगने चले आते हैं? उल्लू का मांस खाते होंगे !” गुस्से में मेरे मुँह से निकल गया।

“जी नहीं, उनमें से ज्यादातर तो वेजिटिरियन हैं।”

“तो क्या तुम्हारे पास प्रवचन सुनने आते हैं?”

“आप जो भी समझें, पर ये सभी अपनी परेशानियों का पुलदिा मेरे सामने खोल कर बैठ जाते हैं, कोई अपने व्यक्तिगत जीवन का दुखड़ा बखानता है तो कोई करियर का तनाव शेयर करता है। यहाँ तक कि कभी कभी उनकी कम्पनी के मार्केट

शेयर के उतार चढ़ावों का रोना भी मैं सुनती हूँ !”

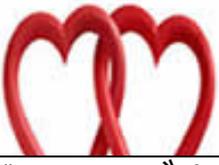
“तुम्हारा पहला अनुभव?” मैं न चाहते हुए भी उसे कुरेदने लगी।

“अब आप मुझे समझने लगी हैं, पर पहली ही मुलाकात में सब कुछ जान लेना चाहती हैं !”

“तो दूसरी मुलाकात की गुंजाईश है?”

“क्यों नहीं ! अगर आप मुझसे मिलना चाहे तब ! पर आपको तो वैसे भी मुझसे मिलने से परहेज़ होगा !”

मेरे पास एक मिनट के लिए जवाब नहीं था इसलिए बात पलटते हुए पूछा- इंडिया से बाहर भी जाती हो?”



“जाना पड़ता है ! फेमलियों वालों को कंट्री में रहकर घर से ज्यादा दनि दूर रहना मुश्कलि हो जाता है, बीवियों शक करने लगती हैं।”

“उन्हें इस शक से बचाने के लिए वदिश यात्रा करती हो?”

“करनी पड़ती है ! कभी कभी कसि की समस्या इतनी बड़ी होती है कि बीवियों के पास सुनने का वक्त नहीं होता !”

“और तुम्हारे पास स्पेशल कान हैं?”

वह पूरी बेतकल्लुफी के साथ हंस दी।

“तुम्हें पहचाने जाने का डर नहीं लगता?”

“डर कसि बात का? और वैसे भी डरना सरिफ वक्त से चाहिए, वक्त अपने साथ बहुत समझदारी लाता है, डर से तो मेरे क्लाइट्स भरे होते हैं, सभी अपने आप से ज्यादा प्यार करते हैं, कसि दूसरे को प्यार करने के लिए हमिमत चाहिए, जो कसि

में देखने को नहीं मलित्ती, कभी कभी मुझे लगता है कि मैं उनकी साइकोथेरेपिस्ट बन गई हूँ ! इतना सब करने के बाद भी आपको लगता है कि मैं मर्द को लूटती हूँ या मेरा साथ मंहगा है?”

“पर बेचती तो आखरि शरीर ही हो।”

“यह आप सोचती हैं, मैं नहीं ! वैसे एक बात कहूँ, आप भी बहुत स्मार्ट हैं, पता नहीं मैं आपसे इतना कुछ कैसे कह गई ! आप क्या करती हैं?”

अब मेरी बारी थी, मैंने कोरेपन से कहा- कुछ खास नहीं ! हाउसवाइफ हूँ, थोड़ा बहुत लखिने का शौक रखती हूँ, बच्चों के लिए कहानियाँ लिखित्ती हूँ।

“तो क्या आप मेरे ऊपर भी कहानी लिखेंगी? मैं नहीं चाहती कि मेरी कहानी मुझसे ज्यादा पाप्युलर हो जाये !”

“तो क्या तुम मानती हो कि तुम पोप्युलर हो?”

“हाँ, क्यों नहीं? तभी तो अपने बूते पर नजि जिदिगी जीने में कामयाब हूँ !”

“इसे तुम कामयाब जिदिगी मानती हो? थोड़ी नहीं, पूरी बेवकूफ हो।”

मेरी बात उसे बलिकुल बुरी नहीं लगी, कुछ सोचते हुए बोली- अच्छा बताइए, अब फरि कब मलिना होगा?